भगत रविदास – सबद ३९

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥

रागु मलार, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १२९३

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥
एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥
जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥
बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥१॥
जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥२॥
जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥३॥२॥

सार: बाहरी रूप, प्रथाएँ और विश्वास प्रणालियाँ विविध हैं जो संस्कृति और व्यक्तिगत स्वभाव से आकार लेती हैं। कोई श्रद्धा में नतमस्तक हो सकता है, कोई ध्यान में शांति पा सकता है जबकि कोई गायन के माध्यम से भक्ति व्यक्त कर सकता है। इन भिन्नताओं के बावजूद, अर्थ और आंतरिक स्पष्टता की मानवीय खोज सार्वभौमिक है। प्रत्येक अभिव्यक्ति के मूल में अपने स्रोत से जुड़ने की इच्छा निहित है। रूढ़िवादी मन इन रूपों पर बहस कर सकते हैं किंतु हमारा गहन अंतर्मन हमारे साँझा सार को पहचानता है। इस समझ को अपनाने से हम यह देख पाते हैं कि हमारे द्वारा चुने गए विभिन्न मार्ग केवल अलग-अलग दृष्टिकोण हैं जो सभी एक ही स्रोत की ओर इशारा करते हैं और हमें अपनी सार्वभौमिकता का उत्सव मनाने के लिए आमंत्रित करते हैं।

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥
सभी जीवों में समान रूप से विद्यमान, उस सर्वव्यापक चेतना का निरंतर स्मरण, आंतरिक शांति की अवस्था प्राप्त करने में मदद करता है। इस अवस्था की तुलना किसी अन्य चीज़ से नहीं की जा

सकती। इसका अर्थ यह है कि साँझा स्रोत की पहचान हमारी चेतना को उन्नत करती है और हमें ऐसी गरिमा प्रदान करती है जो किसी भी सांसारिक पद या स्थिति से बढ़कर है।

एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥
एक ही सार कई रूपों में स्वयं को दर्शाता है जबकि हर पहलू में पूर्णतः उपस्थित रहता है। यह उस अद्वैत वास्तविकता को दर्शाता है जिसमें एकत्व विविधता के रूप में खिलता है और भेदभाव को समाप्त कर देता है। (विराम)

जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥
जो लोग बनाने वाले की तारीफ़ों को एक ग्रंथ की तरह लिखते हैं और उससे आगे के सार पर चिंतन नहीं करते, उनकी स्थिति उस 'अछूत' पेशे के समान मानी जानी चाहिए। यह रेखांकित करता है कि सामाजिक प्रतिष्ठा या ज्ञान की विद्वत्ता अपने-आप में बोध का अधिकार नहीं देती है, जैसा कि भगत नामदेव के जीवन से स्पष्ट है, वह छापा-कार (कपड़ा छापने वाले) थे, समाज द्वारा उपेक्षित किये जाने के बावजूद उन्होंने चेतना प्राप्त की थी।

बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥१॥
व्यास की रचनाओं में, जो विद्वत्ता का प्रतीक हैं और सनक के विचार में, जो सृष्टिकर्ता की संतान का प्रतीक है, सातों महाद्वीपों में आत्म-चिंतन के महत्व को पहचाना गया है। यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि ज्ञान और विवेक की कोई सीमा नहीं होती और वह सभी आध्यात्मिक परंपराओं तथा संस्कृतियों से परे हैं। (१)

जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥
कुछ परंपराओं में ईद और बकराई जैसे पर्व मनाए जाते हैं, जिनमें पशु की बलि दी जाती है और धार्मिक विद्वानों, शहीदों तथा आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को सम्मान दिया जाता है। यह संकेत करता है कि बाहरी आचार-विचार और विश्वास भले ही भिन्न हों किंतु उनका मूल स्रोत एक ही है।

जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥२॥

पिता ने जैसा किया, पुत्र ने वैसा ही अपनाया, फिर भी उसने ऐसा कुछ अर्जित किया कि तीनों लोकों में वह कबीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह संदर्भ दर्शाता है कि आध्यात्मिक विकास प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय है, वह किसी एक विश्वास-प्रणाली तक सीमित नहीं बल्कि विविध अनुभवों और अंतर्दृष्टियों का समन्वय है। (२)

जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥

बनारस और उसके आस-पास के इलाक़ों में मृत पशुओं को रोज़ ढोने जैसे कार्यों के कारण से उनके परिवार को समाज से बहिष्कृत माना जाता है। यह दर्शाता है कि पिछड़े कामों में लगे लोगों के साथ भेदभाव कितना अन्यायपूर्ण है जिससे उन्हें समाज में गरिमा और सम्मान से वंचित रखा जाता है।

आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥३॥२॥

उत्तम आचरण और विवेक से युक्त व्यक्ति को ब्राह्मण भी नतमस्तक होते हैं, ऐसे ही थे, भक्तों के भक्त, रविदास। यह एक विरोधाभास को दर्शाता है, जो स्वयं को शुद्धता का संरक्षक मानते हैं वह भीतर से अशुद्ध हो सकते हैं जबकि जिन्हें 'अपवित्र' कहा जाता है वह अपने शुभ भाव और करुणा से वास्तविक पवित्रता प्राप्त कर सकते हैं। (३)(२)

तत्त्व: भक्त रविदास एकता की ऐसी कल्पना प्रस्तुत करते हैं जो समानता को थोपे बिना विविधता का सम्मान कर उसका जश्न मनाती है। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हमारे मतभेदों से हमारी एकता की भावना कम नहीं होनी चाहिए बल्कि मतभेदों का प्रभाव कम होना चाहिए। विनम्रता को बढ़ावा देते हुए, वह सुझाव देते हैं कि अलग-अलग रूपों में व्यक्त होने वाली एक ही चेतना का विचार, कठोर सामाजिक या धार्मिक ऊँच-नीच के बजाय सच्चे साधकों के बीच ज़्यादा चमकता है। भक्त नामदेव (छापा-कार), भक्त कबीर (जुलाहा) और स्वयं भक्त रविदास (चर्मकार) जैसे क्रांतिकारी संतों का ज़िक्र करके, जिन्हें निम्न जाति का माना गया, वह स्पष्ट करते हैं कि किसी का पेशा या वंश उसकी ज्ञान की संभावना की क्षमता को सीमित नहीं कर सकता।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com